उपोद्घात

प्रस्तुत अनुसन्धानकार्य मलिन आवासों के निवासियों की सामाजिक-आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं के समाजशास्त्रीय अध्ययन पर आधारित है जो आनुभविक तथ्यपरक वैज्ञानिक निष्कर्ष प्रस्तुत ही नहीं करता, अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की ज्वलन्त समस्या के सन्दर्भ में उन तथ्यों को उजागर तथा रेखांकित करता है जो मलिन आवासों के निवासियों द्वारा पग-पग पर सहन की जाती हैं। मलिन आवासों के निवासियों में शिक्षा, जागरूकता, मूलभूत नागरिक, सुविधाओं यथा- बिजली, पानी, हवा, प्रकाश, गोपनीयता आदि का अभाव तो है ही साथ ही वे निर्धनता, ऋणग्रस्तता, बेकारी, दुर्बल स्वास्थ्य, संक्रामक रोगों, अशुद्ध पर्यावरण, मद्यपान, धूम्रपान, मादक द्रव्य व्यसन, अपराध, बाल अपराध आदि की समस्याओं से भी संघर्षरत है । इनके जीवन में निराशा, तनाव, हीनता की भावना, हिंसा, मारपीट आदि का भी समावेश होता है। सरकार द्वारा इनके सुधार के लिये किये प्रयत्नों का इन लोगों को कोई विशेष लाभ नहीं मिलता है तथा ये प्रयत्न अपर्याप्त साबित हो रहे हैं। प्रस्तुत शोध कार्य इसी प्रयोजन से प्रेरित एक लघु प्रयास है जो मलिन आवासों के निवासियों की विभिन्न समस्याऐं उजागर तो करेगा ही साथ ही समस्या समाधान हेतु व्यावहारिक सुझाव भी बतायेगा।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत् है :-

१. मलिन आवासों के निवासियों की सामाजिक एवं जनांकिकीय आवश्यकताओं का अध्ययन करना।
२. मलिन आवासों के विकास में सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक कारकों के स्तर का अध्ययन करना।
३. मलिन आवासों से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं का अध्ययन करना।
४. मलिन आवासों के सुधार एवं विकास के संदर्भ में सरकारी तथा गैरसरकारी अभिकरणों द्वारा किये गये प्रयत्नों की समीक्षा करना।

५. मलिन आवासों के पर्यावरण का वहाँ के निवासियों के स्वास्थ्य के साथ सहसम्बन्ध के स्तर को खोजना।

शोध अध्ययन के उपरोक्त उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुऐ इस शोधप्रबन्ध का अध्यायीकरण किया गया, जो निम्न प्रकार है :-

१. अध्याय प्रथम में शोध अध्ययन की विस्तृत प्रस्तावना का वर्णन किया गया है।
२. अध्याय द्वितीय में शोध पद्धति का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया गया है।
३. अध्याय तृतीय में पूर्व में हुये शोध विषयक साहित्य का पुनरावलोकन किया गया है।
४. अध्याय चतुर्थ में मलिन आवासों के निवासियों की सामाजिक एवं जनांकिकीय विशेषताओं का विवेचन किया गया है।
५. अध्याय पंचम में मलिन आवासों के विकास में सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक व सांस्कृतिक कारकों की भूमिका को प्रस्तुत किया गया है।
६. अध्याय षष्ठम में मलिन आवासों की विभिन्न समस्याओं की पहचान सम्बन्धी व्याख्या की गयी है।
७. अध्याय सप्तम में मलिन आवासों के सुधार एवं विकास में सरकारी तथा गैरसरकारी अभिकरणों द्वारा किये गये प्रयत्नों और उनके प्रभावों के स्तर की व्याख्या की गयी है।
८. अध्याय अष्टम में मलिन आवासों के पर्यावरणीय स्वास्थ्य का सिंहावलोकन किया गया है।
९. अध्याय नवम में शोध विषय के निष्कर्ष, सारांश तथा अनुसन्धानकर्ता के समक्ष आने वाली कठिनाईयों व उनके समाधानों को प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोध कार्य शोध समिति के निर्देशानुसार शोध संक्षिप्तिकी के अनुरूप पूर्ण किया गया है। सम्प्रति ; इसकी उपादेयता एवं महत्व की अनुभूति तो पाठकगण तथा विषय के विद्वान मनीषी ही भलीभांति कर सकते हैं कि शोधकर्त्री अपने प्रयास में कितनी सफल रही है।

शोधकर्त्री

Vijayshree Shukla

(विजयश्री शुक्ला)